

DPN 5960

Title: नवग्रह स्तोत्र NAVA GRAHA STOTRA

Run. No. 6651

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymn

Religion: Hindu / Buddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 24 x 7

Folios 7 Lines (in a page) 5
(missing 6-14)
Chapt. / act /

Compl. / Incompl.

Author / translator

Scribe / donor

फणीन्द्र रत्न वज्राचार्य
Phanindra Ratna Vajra-
carya

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो रत्नत्रयाय ॥ ॐ नमो कामिनामाय तत्प्राग्वर्णितः
इति सत्यवत्संबुद्धाय ॥ ॐ नमो वासुदेवाय विष्णवे ॥ वासीसाय. महासाय. महाकायिकाय
समाप्ति वाक्य (colophon) - इति नवग्रह स्तोत्र समाप्त ॥ ॐ

ॐ नमो महा स्वान प्राप्ताय. कोधीसत्वाय महासत्वाय महाकाहुनीकाय ॥

७३. नवग्रह स्तोत्र

पूरासवसे

फरशीन्दुरत्न वज्राचार्य

॥प॥

हाननं कृत्वा ॥ काष्ठा उक्तननं कृत्वा ॥ सिमावंधनं कृत्वा ॥ धननिवन्धनं कृत्वा ॥ नमः ॥ ॐ अमृतं
अमृताद्भवं ॥ अमृतं संरुवा ॥ आत्मा स्वर्गमागममालयः ॥ मासयः ॥ समप्रसमः ॥ उपसमः ॥ सर्व
व्याधिनुपसमः ॥ सर्वकान्तं ॥ नृपसमः ॥ सर्वग्रहन्तं ॥ रुदाय नृपसमः ॥ सर्वकृतिनाचमपस
सः ॥ रुगवर्तिपदा ॥ सवनी उन्नं ॥ विदुन्नं ॥ उन्नं ॥ उन्नं मूनस्वाहा ॥ ॥ गौलिगन्धनी ॥ चाधुनी ॥ मा
नंगि ॥ वचपृक् ॥ सिस्वाहा ॥ ॥ ॐ अंकुल ॥ मंकूल ॥ पन्नमवनीयस्वाहा ॥ नमस्तर्वनानां मा

२

धजां

हावनानां ॥ रुगवर्तिपि ॥ अचिपद ॥ सवनी गानायः ॥ पिभाचिस्वाहा ॥ ॐ पिभाचिपद ॥ सवनी ॥ ॐ
हर्हं रुट्पिभाचिस्वाहा ॥ ॥ आर्यपद ॥ सवनी मदा मानी प्रसमनि ॥ नामधाने निपनी
समापे ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ नमो रुगवर्त्य आर्य धजांग कय नाथ ॥ नमः ॥
॥ ॐ नमो नत्तयाय ॥ ॐ नमो समन्तवृद्धानां ॥ ॐ धजांग कय न ऊयः ॥ विऊयः ॥ ऊयवाहिनी ॥ संक
नीपसंकनी ॥ रुंजनि ॥ प्ररंजनि ॥ नकः ॥ मां सर्वसत्त्वानां ॥ प्रत्यथिकावाः ॥ प्रत्यमिगावाः ॥ अरिदमं

॥ ध्वजो ॥

रुक्मय २ रुक्मय २ माहय २ रुगवति रुयवाहिनी ॥ यथागलिमथ २ प्रमथ २ हस २ ग्रहस २ हं हं २
हं हं २ लघु २ नम्यादनिनीन ॥ चर्तुवक ॥ चर्तुदृष्ट ॥ चर्तुउज ॥ अमिममनचक ॥ शीलवर्जचं
धननिनक २ मांरुगवतिमवकथापुडवा ॥ धर्मगमधायाम्य ४ हं हं रुगवतिहन २ दह २ पच २
मथ २ प्रमथ २ धूनु २ विधूनु २ सर्वविघ्नविनायकांना ॥ सर्वसकन सर्वइष्टान २ सर्वग्रहान ॥ स्त्रि
टय २ रुक्मय २ रुक्मय २ रुक्मय २ माहय २ विधंमय २ सर्वसकन २ रुद्र २ रुद्र २ उल्कामृषि २ उल्का

३

धनोनी ॥ उलाक्यमथनिनक २ मांरुन २ चीनि २ चूनु २ ॥ कन २ किनि २ कूनु २ मंच २ अद्रुतहास ॥
रामय २ रामय २ रुद्रसकन ॥ धर्मसकन ॥ संघसकन ॥ सत्यवादिमकन ॥ रुद्रमर्धमघसत्य ॥ मंती
कर्मसत्यवादिनि २ सत्यमार्गीकर्म ॥ नभादलिक २ रुद्रायय २ नूदमानय ॥ विक्रमानय ॥ चन्द्र
र्यमानय ॥ कलाकाधियमानय ॥ सर्वयकनाक्रम ॥ कर्मधुमहालगोदिमानयमांनक २ नकापयश्च
नू २ पृथ्व्यामालिनि नू २ मनश्मदि २ चिदि २ शीकुरुमृषि ॥ यलस्येन्यकलाद्यदनकलिहन २ हिलि २ रु

॥धगां॥

लू२ धंधं२ हृ२ नीनममिजसु धं२ ॥ यद्वविलाकिरु नरु२ सांसर्वरुथागगवलकिरु स्वाहा॥
उंगुना जपुना स्वगमाय स्वाहा॥ उंचदार्कविमलस्वाहा॥ उंसर्वग्रहनरुधामिकननस्वाहा
नरु२ सांसर्वरुयय२ स्वाहा॥ ॥ नृमिथी धजाग्रकयुना नामधननिपलिसमाफं ॥
॥ श्रीसूर्य ॥ १ ॥ उंनमाग्नीजादिस्या२ ॥ ॥ सफासुहकसमानुठाः अनुनास्यार्थगुनमं ॥ स्वगपूष्यंधनंदवः
नसूर्यपुनसाम्यहं॥ १ ॥ वधपंपूष्यसंकासं हानकूंदलरुषिकं ॥ एकवकस्वनंदवः नसु

४

र्यपुनसाम्यहं॥ २ ॥ लाहिरुंवरुसंकासं सर्वलाकपिनाम्यहं॥ सर्वव्याधिहनंदवत्वं सूर्यपुनसा
म्यहं॥ ३ ॥ त्वंदवंसर्वसंका उंकाविक्रमहस्वनं॥ पनंधमपेनंरुन त्वंपृथिविआपनंजच॥
॥ ४ ॥ वायुआकासम्यवच सर्वरुग्नीजगगतार्थं त्वंसूर्यपुनसाम्यहं॥ ५ ॥ त्वंदवलाककलो
नं रुकिरुिकाननम्यकनं॥ नदनुदंधनंदवः त्वंसूर्यपुनसाम्यहं॥ ६ ॥ अस्वंगुमधुनाकानंरु
लाजसर्विवजिगं॥ गगनालिंगमालाधं निमेलं निर्विकल्पच॥ ७ ॥ निर्विकालानिलामया॥

॥ श्रीगुरुभ्यः ॥

जगत्कान्ता जगत्सुखसुख्ये गानं पथनीत्यं ग्रहपिदानिवाननं ॥ ८ ॥ धनधान्यमनावांस्तु ॥ ९ ॥
नमोभक्तिनिष्ठसं ॥ सिवनोरी सह ॥ १० ॥ कृत्वा जागवननं रुच्यम् ॥ ११ ॥ कृत्यं धनरुचिनिष्ठं नरु
रुलंप्रनमाम्यहं ॥ गयानां पिंधुदान्यम् ॥ पिंडीनां समुद्रवत् ॥ १२ ॥ दृष्ट्वा जाग्यस्वनंदं वं ॥ ओ
॥ १३ ॥ स्वनं समापनं ॥ स्वमनाथं गत्थे वच ॥ कदानममृगपित्वा ॥ यनजन्मानविमर्श ॥ १४ ॥ एकद
गमह्यनि संकान्तिमहर्दय ॥ सगकोटि आमावास्यां ॥ नरु रुलंप्रनमाम्यहं ॥ १५ ॥ कीटि

निर्मलं मंगलं सुमंगलं ॥ सर्वरुच्यप्रभाचनि ॥ सर्वपापरुच्यथा ॥ विभावनिष्ठास्वाहा ॥ चक्रायुधनाजाय
स्वाहा ॥ नाजरुच्यं ॥ चोलरुच्यं ॥ अत्रीरुच्यं ॥ मलनरुच्यं ॥ उदकरुच्यं ॥ गोरुच्यं ॥ यनचक्र
रुच्यं ॥ सर्वरुच्यं ॥ स्येन्यमध्वगंगावा ॥ चोलमध्वगंगावा ॥ सिंहमध्वगंगावा ॥ मंशमध्वगंगावा ॥
सर्पमध्वगंगावा ॥ यूगमध्वगंगावा ॥ कस्तूरस्यमध्वगंगावा ॥ व्याघ्रमध्वगंगावा ॥ हस्तिमध्वगंगावा ॥
समुद्रमध्वगंगावा ॥ कानपासमध्वगंगावा ॥ काष्ठमध्वगंगावा ॥ नममध्वगंगावा ॥ ॥ अथ सर्वद

॥ अरुयं ॥

नमो देवाय नमः

वयं नमः २ मां सर्वसत्त्वानां च ॥ आयुः शालाग्री आर्यावलोकनं धनस्य हरं हनीक हलविहने ॥
सर्वप्रकृतिस्त्रिगानां सिद्धिविजयीय नमस्वाहा ॥ ॥ अरुयं श्री आर्यावलोकनं धनस्य अरुयं कनि
नामध्वजनिपलिसमायं ॥ ॥ गुरुं ॥ ॥ १ नमो श्री नवग्रहाराय ॥ ॥ २ लाकदिपं सच नाचनं
कुलंगमसनं ॥ ॥ ३ मयरासि सत्यमवागसदृशकनूक ॥ ॥ नमो मित्रस्य सहयमूय ॥ १ ॥
मंषकंदुखावातं यत्प्राकाजिविगं ॥ ॥ हंसवाहनसंप्रसूनी भक्तलंपनमामिहं ॥ २ ॥

१५

प

विचहां हि संकजं चारुगप्रनिप्रकृतिषिगं ॥ ॥ कुमालकुलसंरुक्तं लाहिगांगपनमामिहं ॥ ३ ॥
शीलाचनायुक्तिकान्ति ॥ ॥ नचापधनकनं पद्मासनसिक्तं ॥ ॥ सोम्यनाहिदधयपनमामिहं ॥ ४ ॥
सुप्रसामुको नृसंसाक्तनंकांचनपरं ॥ ॥ वलपाजाकृपावृष्टं सहस्रनमामिहं ॥ ५ ॥ नाना
भासुंसंवेद्यं गुलागं पद्ममासनं ॥ ॥ कंठाकृष्टं हस्तकं दृष्ट्यगुनूपनमामिहं ॥ ६ ॥ ॥ सुप्रसाम
कृष्णवर्णं वज्रदं धलं विदुः ॥ ॥ विषयानिगानिर्ग्यानं कुमानं नृधं पनमामिहं ॥ ७ ॥ ॥ विजयिगं

२ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥

॥ नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

हसं हानं मानवा लरु अंकलं ॥ धामस्ये अर्द्धकायक विधु दगं पुन मामिहं ॥ ५ ॥ खड्गपाश सवरागध
किलाधपुच्छरुषधं ॥ विविशुट दारुं शैतिक उं पुन माम्पहं ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सर्वशक्तिहगानां पिधमनावलिनं ॥ अं अस्मसमसम सर्वत्वं ॥ दा इ न न वाधि भसनि ॥ हन हन स्त
नस्तन धविगगनागवृद्ध धर्म न सन सन ॥ समवेलाह सहस्र ज्येष्ठव ॥ गगनमेहावन नरुत्प
शनकननसा गच स्नाहा ॥ ॥ लडा विरवट ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

फराणिन्दरान वज्राचार्य